इस राग का इस्तेमाल फिल्म 'अभिमान' के हिट गीत 'अब तो है तुमसे हर खुशी अपनी' में जिसे लता मंगेशकर ने गाया। संगीतकार जयदेव ने बालकवि बैरागी के बोल पर लता मंगेशकर से फिल्म 'रेशमा और शेरा' का गीत 'तू चंदा मैं चांदनी तू तरुवर मै शाख रे, तू बादल मैं बिजली, तू पंछी मैं प्यास रे' गवाया जिसकी धुन भी इसी राग पर बनाई गई है।

मांड के अलावा राजस्थान के अन्य लोक संगीत खासकर लंगा-मांगणयार के गीत और कालबेलिया के सपेरा आदि नृत्य/गीतों का इस्तेमाल भी फिल्म संगीत में खूब हुआ है। राजस्थान के लोक संगीत की धुनों से प्रभावित 'बवंडर' 'लेकिन', 'रुदाली', 'लम्हे, 'चांदनी', 'हम दिल दे चुके सनम', 'आई एम कलाम', 'धनक' आदि फिल्मों का गीत-संगीत हमारे समक्ष है। हम दिल दे चुके सनम का 'निंबूड़ा निंबूड़ा' गीत थार के रेगिस्तान की आदिवासी जनजातियों द्वारा लोकगीत के रूप में गाया जाता है। शिव-हरि की धुनों से सजी यश चोपड़ा की फिल्म 'लम्हें' में 'म्हारे राजस्थान मां', 'चूड़ियां खनक गई रात मां' और 'मेघा रे मेघा रे' सरीखे राजस्थानी धुनों पर बने गीत थे। रेगिस्तान की कहानी पर लता मंगेशकर की बतौर निर्माता 1990 में बनी फिल्म 'लेकिन' में गुलजार और हृदयनाथ मंगेशकर की जोड़ी ने 'यारा सीली सीली बिरहा की रात', 'सुनियो जी एक अरड़ म्हारी' और 'मैं एक सदी से बैठी हूं' जैसे लोक की सुगंध भरे मीठे गीत बनाए। भूपेन हजारिका ने कल्पना लाजमी की 'रुदाली' में 'दिल हुम हुम करे', 'बीती ना बिता, रैना', 'झूठी मूटी मितवा' और 'समय ओ धीरे चलो' आदि गीत रचे जिनमें राजस्थानी लोक संगीत की महक है।

राजस्थानी लोक संगीत को व्यापक पहचान दिलाने का एक बड़ा प्रयास राजस्थान के ही गीतकार भरत व्यास ने 1949 में किया जब उन्होंने अपने ही निर्माण और निर्देशन में 'रंगीला राजस्थान' फिल्म बनाई। इस फिल्म में भरत व्यास ने पारंपरिक लोक संगीत के साथ ही खुद के लिखे तीन गीतों को कम्पोज भी किया।

फिल्म के कुछ खास गीत थे 'जल बिन मछली पिया बिन सजनी' (राजकुमारी), 'झिरमिर री कि राम प्यारा' (सितारा कानपूर, राजा गुल), 'मार नजर तडपावे जिया' (राजकुमारी, स्नेहल भटकर), 'ओ जंगल मंगल देश म्हाने बोलो लागे जी' (राजकुमारी, स्नेहल भटकर), 'पीपल की ओट चन्द्रमा चमके' (राजकुमारी, स्नेहल भटकर) और 'सूरज बदली में छुप जा रे (सितारा कानपुर, राजा गुल) आदि। राजस्थान में पानी की समस्या को लेकर लिखी गई कहानी पर निर्माता-निर्देशक ख्वाजा अहमद अब्बास ने भी 1971 में एक प्यारी-सी फिल्म 'दो बूंद पानी' बनाई थी जिसमें जयदेव ने राजस्थान के लोक संगीत से प्रभावित संगीत रचा। इस फिल्म में कैफी आजमी के लिखे गीत 'पीतल की मोरी गागरी जयपुर से मंगवाई' (परवीन सुलताना), 'जा री पवनिया पिया के देश' (आशा भौसले) और शीर्षक गीत 'दो बूंद पानी' (नूरजहां, मुकेश) शामिल थे जबकि एक गीत 'बनी तेरी बिंदिया की' (लक्ष्मी शंकर) बालकवि बैरागी ने लिखा। पुराने दौर में कुछ फिल्में राजस्थान के वीर नायक/नायिकाओं पर बनी जिनमें गीत/संगीत राजस्थान का ही था। वीर दुर्गादास, महाराणा प्रताप, वीर राजपूतानी, महारानी पद्मिनी, वीर अमरसिंह राठौड़ आदि फिल्मों को यहां याद किया जा सकता है।

इन फिल्मों का संगीत उस दौर के दिग्गज संगीतकार सरदार मलिक, प्रेम धवन, एस एन त्रिपाठी, प्रेम भंडारी आदि ने रचा और लता, आशा, मोहम्मद रफी और मुकेश सरीखे बड़े गायकों ने इन्हें गाया। कुछ और पुराने गीत यहां याद आ रहे हैं जो राजस्थानी लोक धुनों से प्रभावित है इनमें 'दो दिल' का मोहम्मद रफी का गाया 'राम राम जपना पराया माल अपना', 'पूर्णिमा' के लिए मुकेश का गाया 'गौरी नैन तुम्हारे क्या कहने', 'होली आई रे' के लिए हंसा दवे का गाया 'जवनिया के दिन दुई चार रसिया', 'दूज का चांद ' का आशा भौसले और लता मंगेशकर का गाया 'सजन सलोना मांग लो जी, 'अनपढ़' का आशा और रफी का युगल गीत 'दुल्हन मारवाड़ की', 'पाप और पुण्य' का लता मंगेशकर का 'मैं हूं जोधपुर की जुगनी', 'रेशमा और शेरा' का लता का गाया 'तू चंदा मैं चांदनी', 'जाने अनजाने' में लता का ही गाया 'मोहे जाल में फंसाय लियो रे', 'बिराज बहु' का शमशाद बेगम का 'ना जा रे ना जा रे', 'दुल्हन एक रात की' का आशा भौसले का 'ओ राजाजी हमार कहा मानो', आशा